प्रातः क्लास 2-3-68 ओमशान्ति पिताश्री मधुबन

ओमशान्ति। पतित-पावन शिव भगवानुवाचः बाप ने समझाया है कोई भी मनुष्य मात्र को फिर चाहे दैवी गुण वाला हो, या आसुरी गुण वाला हो उनको भगवान नहीं कह सकते हैं। यह तो बच्चे जानते हैं दैवीगुण वाले होते हैं सतयुग में। आसुरीगुण वाले होते हैंकलियुग में। इसलिए बबा ने लिखत भी बनाई थी कि दैवीगुण वाले हो याआसुरी गुणवाले हो? सतयुगी हो या कलियुगी हो? यह बातें बड़ा मुश्किल मनुष्यों को समझ में आती हैं। जैसे बन्दर को समझाया जाये तो समझेंगे क्या। वैसे यह भी बन्दर बुधि हैं। सूरत मनुष्य सीरत बन्दर की है। सतयुग में सूरत मनुष्य की सीरत देवताओं की होती है। तुम सीढ़ी पर बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। तुम्हारे ज्ञान के बाण बहुत अच्छे हैं। परन्तु बाण के नोक में ज़हर होता है वह लगने से ही मर जाते हैं। वैसे ~~तुम्हारे~~ तुम्हारे तलवार में भी जौहर होता है। कोई बहुत तीखे जौहर वाले तलवार होते हैं। जैसे गुरु गोबिन्द सिंह की की तलवार विलायत चली गई थी। उनको तलवार लेकर कितनी परिक्रमा करते हैं। कितना तलवार कामल है। कोई तो दो पैसे की भी तलवार होती है। जिसमें जौहर बहुत होता है वह बहुत तीखे होते हैं। इसकी निशानी दिखाई पड़ती है। जौहर वाले तलवार का बहुत मान होता है। बच्चों में भी ऐसे ही है। कोई में ज्ञान तो बहुत है परन्तु योग का जौहर बिलकुल थोड़ा है। इससे जो बान्धेली है, गरीब हैं वह शिव बाबा को बहुत याद करती है। ज्ञान कम है। याद में तीखे हैं। याद का जौहर अच्छा है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हैं। जैसे एक अर्जुन औ भील का मिशाल है। दिखाते हैं अर्जुन से भील तीखा हो गया। बाणा मारने में। अर्जुन अर्थात जो घर में रहते हैंरोज सुनते हैं उन से बाहर वाले तीखे हो जाते हैं। घर में साथ में रहने वालों में न तो ज्ञान है, न योग है। कुछ भी नहीं। जिनमें ज्ञान का जौहर है उनके आगे वह भरी होते हैं। कहेंगे भावी। कोई फेल होते हैं तो दिवाला मारते हैं तो नसीब पर हाथ रखते हैं ना। क्या पद पावेंगे। ज्ञान के साथ फिर योग का जौहर भी चाहिए। जौहर नहीं है तो गोया वह भी कुकरज्ञानी है। बच्चे भी फेल करते हैंकोई का पति में, कोई का बच्चों में कोई का किस में प्यार रहता है। ज्ञान में तो बड़े तीखे परन्तु अन्दर में खिट2 बहुत रहती है। यहां तो बिलकुल साधारण रहना होता है। सब कुछ देखते हुये जैसे कि देखते नहीं। एक वर से ही प्रीत है। तब गाया भी जाता है कम कार डे दिल यार डे। आखिर मे काम करते भी बुधि में यह याद रहना है। आत्मा हूं। बाप ने फिर फरमान किया है मुझे याद करो रहो। भक्ति मार्ग में भी काम काज करते हुये ना कोई ईष्ट देवता को याद करते रहते हैं। वह तो पत्थर का बूत। उनमें आत्मा तो है नहीं। लाखना 0 पूजे जाते हैं। पत्थर की मूर्तियां हैं ना। बोलो उनकी आत्मा कहां। अभी तुम समझते हो वह जरूर कोई नाम रूप में है। पतित है। अभी फिर योगबल से तुम पावन देवता बन रहे हो। रूमआबजेक्ट यह है। दूसरी बात बाप समझाते हैं ज्ञान का सागर और ज्ञान गंगाएं इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही होती है। सब एक ही समयपर होते हैं। भल सन्यासी तो बहुत हैं परन्तुउनमें ज्ञान नहीं। ज्ञान का सागर आता है ही पुरुषोत्तम संगम युग पर। कब उनके आगे ज्ञान होता नहीं। यह सन्यासी आद पुराना शास्त्रो का ज्ञान सुनाते रहते हैं। बड़े2 ऋषि-मुनि आद सब वेद शास्त्र आद पढ़ते रहते हैं। ज्ञान सागर तो आते ही हैं कल्प के इस पुरुषोत्तम संगम युग पर। ज्ञान सागर है निराकार परमपिता परमात्मा शिव। उनको शरीर जरूर चाहिए। जो बात कर सके। बाकी पानी की तो बात ही नहीं। यह तुमको ज्ञान मिलता ही है संगम पर। बाकी सब के पास है भक्ति। भक्ति-मार्ग वाले गंगा के पानी को सब पूजते रहते हैं। पतित-पावन तो एकही बाप है। वह आते ही हैं एक बार। जब पुरानी दुनिया पलटते हैं। अब यह किसको समझाने में भी बुधि चाहिए। एकान्त में विचारसागर मथन करना पड़े। क्या लिखें। जो मनुष्य समझ जाये ज्ञान सागर पतित-पावन तो एकही परमपिता परमात्मा ही है वह जब आते हैं उनके बच्चे जो ब्रह्मा कुमार-कुमारियां बनते हैं वही ज्ञान ~~कला संगम~~ उठाये आकर ज्ञान गंगाएं बनते हैं। उनके ज्ञान ज्ञान गंगाएं है जो ज्ञान सुनाते रहते हैं। वही सदगति कर सकते हैं। पानी में स्नान करने से पावन नहीं बन

सकते। शिव बाबा फिर बोलते प्रजापिता ब्रहमा कुमार-कुमारियां ब्रहमा कुमारी नहीं तो ज्ञान है नहीं। ज्ञान होता ही है संगम पर। यह समझने में भी बड़ी युक्ति चाहिए। बड़ा अन्तर्मुख चाहिए। शरीर का भी भन छोड़ अपन को आत्मा समझना है। इस समय कहेंगे हम पुरुषार्थी हैं। याद करते2 भी जब पाप खत्म हो जायेंगे फिर सम्पूर्ण लड़ाई शुरु हो जावेंगे। जब तक सब को पैगाम मिल जाये। पैगाम अथवा मैसेन्ज तो शिव बाबा ही देते हैं। खुदा को पैगम्बर कहते हैं ना। तुम सभी को यह पैगाम अथवा मैसेन्ज पहुंचाते हो कि अपन को आत्मा समझो। परमपिता परमात्मा शिव के साथ योग लगाओ तो विकर्म विनाश होंगे। बाप प्रतिज्ञा करते हैं तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जावेंगे। यह तो बाप मुख से बैठ समझाते हैं। पानी को गंगा क्या समझावेंगी। बेहद का बाप बेहद के बच्चों को समझाते हैं तुम कितने बड़े बेसमझ नालायक, कंगाल बन गये हो। तुम सतयुग में कितना सुखी सम्पतिवान थे। यह है बेहद की बात। यह देवी-देवतायें भी इस समय तामोप्रधान हैं। बाकी यह जो चित्र आद सब तो भक्ति मार्ग के हैं। यह भक्तिमार्ग के सामग्री भी बननी ही है। मनुष्यों को दुर्गति को पाना ही है। शास्त्र पढ़ना, पूज कराना यह भी भक्ति है ना। मैं थोड़े ही शास्त्र आद पढ़ता हूं। मैं तो तुम पतितों को पावन बनाने ज्ञान सुनाता हूं कि अपन को आत्म समझो। अभी आत्मा और शरीर दोनों ही तमोप्रधान पतित है अभी बाप को याद करो तो तुम यह देवता बन जावेंगे। देह के सभी पुराने सम्बन्धों से ममत्व मिट जाये। गाते भी हैं बाप आप जब आयेंगे तो हम और कोई को नहीं सुनेंगे। एक आपे से ही सम्बन्ध जोड़ेंगे और सब देहधारियों को भूल जायेंगे। तो अब बाप वह इनजाम तुमको याद कराते हैं। बाप कहते हैं मेरे साथ योग लगाने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम नई दुनिया के मालिक बन जावेंगे। यह है मुख्य सब्जेक्ट। राजाओं के साथ प्रजा भी तो जरूर बननी है। राजाओं को दास-दासियां भी तो चाहिए ना। बाप सब बातें समझाते रहते हैं। अच्छी तरह योग में न रहेंगे दैवीगुणा धारण न करेंगे तो उच्च पद कैसे पावेंगे। घर में भी कोई न कोई बात पर झगड़ा कलह होते हैं ना। बाप लक्ष्य देते हैं तुम्हारे घर में कलह है इस लिए ज्ञान ठहरता नहीं। बाबा पूछते हैं अच्छे स्त्री पुरुष दोनों ठीक चलते हैं। चलन बड़ी अच्छी चाहिए। क्रोध का अंश न रहे। अभी तो दुनिया में कितना हंगामा अशान्ति है। क्या यह सदैव चलती रहेगी। आगे चल कर शान्त हो जावेंगे। तुम्हारे में बहुत ज्ञान और योग के तीखे हो जावेंगे तो और भी बहुत ही याद करने लग पड़ेंगे। तुम्हारी प्रेक्टीस भी अच्छी हो जावेगी। विशाल बुधि हो जावेंगे।

ज्ञान गंगा का चित्र कोई ठीक रीति बनाकर भेजा नहीं है। बाबा के पास तो एक बोर्ड जो बना कर वह बाप ने रिजेक्ट कर दिया है। ऐसे बहुत चित्र रिजेक्ट करते हैं। क्योंकि कोई अर्थ नहीं निकलता। बाबा तो छोटे2 चित्र भी रिजेक्ट करते हैं। सभी बड़े2 चित्र हों। बाबा तो कहते हैं बहुत बड़ा चित्र बनाओ। जो बाहर के मुख्य स्थानों पर रखो। जैसे नाटक के चित्र भी रखते हैं ना। ऐसी अच्छी चित्र बनावें जो बिलकुल खराब न हो। गंगा का चित्र बहुत अच्छा हो। नीचे में लिख दो भगवानुवाचः मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान देवता बन जावेंगे। तुम देवता थे सो असुर बने हो। सीढ़ी भी बहुत बड़े2 बनाये ऐसे जगह रखो जो सब की नज़र चढ़े। शीट पर ही ऐसा रंग हो मतलब तो पक्का हो पानी वा धूप आद में बिलकुल खराब न हो। मुख्य स्थानों पर रख दो। या कहां एक्जीबिशन होता हो तो मुख्य दो तीन चित्र ही काफी है। बाबा श्रृंगार अक्षर पसन्द नहीं करते हैं। यह गोला भी वास्तव में इस दिवाल जितना बनना चाहिए। भल 5-10 आदमी उठा कर कहां रखो। कोई भी दूर से देखेंगे तो एकदम क्लीयर पता पड़ जावेगा सतयुग में और तो सब धर्म इतने मनुष्य होते ही नहीं। वह तो आते ही बाद में हैं। पहले2 स्वर्ग में तो बहुत थोड़े आदमी होते हैं। अभी स्वर्ग है या नर्क। तुम इस पर बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। जो आवे उनको समझाते रहो। बड़ा चित्र हो। जैसे बड़े2 बूत बनाते हैं। पाण्डवों की कितनी बड़ी बूत बनाई है। तुम पाण्डव हो ना। पाण्डव किसको

किसको कहते हैं यह भी मनुष्यों को पता नहीं है। तो चित्र बहुत बड़े2 अच्छे बनानी चाहिए। श्रीकृष्ण के भी चित्र में लिखना है जब कि गीता झूठी है तो उनके सब पत्ते झूठे हो जाते। कोई क्या करेंगे। यह तो बन्दर सम्प्रदाय है ना। बन्दर से कब डरा नहीं जाता है। मनुष्य भी आकर अपनी बक बक करेंगे। उनको समझाया जायेगा। कृष्ण तो पुनर्जन्म लेते हैं। उनकी आयु तो 150 वर्ष थी। शिव बाबा 150 वर्ष रहते हैं क्या। शिव बाबा तो संगम युग पर ही 50-60 वर्ष पढ़ाते हैं। वह (श्रीकृष्ण) तो है ही सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स। तुम समझाते 2 अपनी राजाई स्थापन कर लेते हो। कोई पढ़ते2 अपनी पढ़ाई छोड़ भी देते हैं। स्कूल में भी कोई नहीं पढ़ सकते हैं तो पढ़ाई छोड़ देते हैं ना। यहांभी बहुत हैं पढ़ाई को छोड़ दिया है। फिर वह स्वर्ग में नहीं आवेंगे क्या। मैं विश्व का मालिक, मेरे मुखसे दो अक्षर भी सुना तो वह भी स्वर्ग में जरूर आवेंगे। आगे चल कर ढेर सुनेंगे। यह सारी राजधानी स्थापन होती है। कल्प पहले मिशल। बच्चे समझते हैं अनेक बार राज्य लिया है, फिर गवाया है। हीरे जैसा फिर कौड़ी जैसा बने हैं। भारत हीरे मिशल था अभी क्या हुआ है। फिर भारत वही होगा ना। इस संगम को पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। उत्तम ते उत्तम पुरुष यह हैं। बाकी सभी हैं कनिष्ट। जो पूज्य थे वही फिर पुजारी बनते हैं। 84 जन्म लेते हैं। वह शरीर भी खत्म हो गये। आत्मा भी तमोप्रधान बन गई। जब सतोप्रधान है तो पूजते ही नहीं। चैतन्य में है। अभी तुम शिव बाबा चैतन्य को याद करते हो। फिर पुजारी बनेंगे तो पत्थर को पूजेंगे। अभी बाप तो चैतन्य हैं ना। फिर उनको ही पत्थर की मूर्ति बना कर पूजा करते हो। रावण राज्य में भक्ति शुरु होती है। आत्माएं वही हैं। भिन्न2 शरीर धारण करती आती है। नीचे गिरने से ही भक्ति शुरु करते हैं। अभी बाप आकर ज्ञान देते हैं तो दिन शुरु होता है। ब्रहमा सो देवता बन जाते हैं। अभी तो देवता नहीं कहेंगे। ब्रहमा तो सतयुग में होता नहीं। तब सूक्ष्मवतन में ब्रहमा कौन है। यहां तो तपस्या कर रहे हैं। मनुष्य है ना। शिव बाबा को शिव बाबा ही कहा जाता है। इनमें है तभी भी शिव बाबा ही कहेंगे। दूसरा कोई नाम नहीं रखा जाता। इनमें शिव बाबा आते हैं। वह ज्ञान का सागर है। इस ब्रहमा तन द्वारा ज्ञान देते हैं। तो चित्र आदि भी बड़ी समझ से बनानी चाहिए। इसमें तो लिखत ही काम आती है। पतितपावन पानी का सागर पानी की नदियां हैं वा ज्ञान सागर उन से निकली हुई ज्ञान गंगाएं ब्रहमाकुमार-कुमारियां हैं। इनको ही बाप ज्ञान देते हैं ब्रहमा द्वारा। जो ब्राहमण बनते हैं वही फिर देवता बनते हैं। विराट रूप का चित्र भी बहुत बड़ा दिखाना चाहिए। यह है मुख्य चित्र। यहाँ तो वह चित्र है नहीं। दो चार रोज में चित्र बन सकता है। यहां बच्चे आकर बाबासे चित्र आदि मांगते हैं तो बाबा दे देते हैं। बाबासे मांगे और बाबा ना करे यह तो हो नहीं सकता। कहेंगे ले जाओ। यही तो हम खुद ही ज्ञान सुनाने वाले बैठे हैं। बाबा के पास कोई राईट हैंड है नहीं। ढूढ़ता रहता हूं। विचार करता हूं फलाने को मंगाऊं। तो रिपोर्ट आती है इनकी क्रिमनल आई है चल न सकेंगे। आत्मा को चक्षु है सिविल बुधि। शरीर के चक्षु है क्रिमनलबुधि। तुम्हारी आत्मा अभी त्रिकालदर्शी बनती है। यह भी कोई विरला ही समझते हैं। बहुत बुधू हैं। बाप को फरकती दे देते हैं तो जाकर चण्डाल बनेंगे। चण्डाल और क्या करेंगे। वह तो सिर्फ मूर्दे को तिल्ली देने ही जानते हैं। उनको यही बुधि में है चिक्षा को आग कैसे लगावें। बाकी तो अनपढ़ ही होते हैं। तो बच्चे समझते हैं राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें तो सब चाहिए। पिछाड़ी में तुमको सब सा0 होंगे। फर्स्ट क्लास दास-दासियां भी बनेंगी। फर्स्ट दासी कृष्ण का पालन करेंगी। सफाई करने वाले, कपड़ा धूलाई करने वाली, बर्तन साफ करने वाली, खाना पकाने वाली सब होंगे ना। यही से ही निकलेंगे ना। फर्स्ट नम्बरवाले जरूर अच्छा पद पावेंगे। वह भासना आती है। बाबा को बच्चों से भासना आती है ना। यह बहुत अच्छी मुरली चलाते हैं परन्तु योग कम है। कोई स्त्री-पुरुष से एक ज्ञान में है तो कहते हैं बाबा दूसरा पत्ती ठीक नहीं है। झगड़ा चलता है। इसको भी ठीक करना पड़े। नहीं तो खिट2 होगी। गाड़ी ठीक न चलेगी। एक दो को समाधान करना है। प्रवृति-मार्ग है ना। जोड़ी एक जैसी चाहिए।

या तो उनको आपसमान बनाना है, या फिर मूंह छोड़ देना है। स्त्री स्त्री नहीं है फिर तो भाई2 भी नहीं। यह दुनिया ही नहीं रहनी है। पिछाड़ी तुम दुनिया को ही भूल जावेंगे। समझते तो हो ना हम हंस हैं यह बगुला है। किस में कोई अवगुण, किस में कोई। चटा-बेटी चलती रहती है। मेहनत है बहुत। सहज भी है। सेकण्ड में जीवनमुक्ति। बिगर कोड़ी खर्चा। बिगर खर्चा ऊंच पद पा सकते हैं। गरीब जो हैं वह अच्छी सर्विस करते रहते हैं। यह तो पता है ना कौन2 हाथ खाली आये। बहुत ले आने आए हैं नहीं। गरीब बैठे हैं और बहुत ऊंच मर्तबा पा रहे हैं। बाप तो समझाते हैं यह सारी दुनिया ही भस्म हो जाने वाली है। अर्धकल्प में कितने खत्म हो जाते हैं। मकान पैसे आद सब खत्म हो जाते हैं। हीरोशिमा में सब मर गये। आत्माओं ने जाकर दूसरा जन्म लिया। उस समय दुःख फील करने की भी फुर्सत नहीं मिलती है। अचानक मरते रहेंगे। पीनी भी नहीं पहन सकेंगे। रोने का टाईम ही नहीं मिलेगा। हास्पिटलें ही नहीं रहेंगी। बम्स ऐसे जहरीले बनाते हैं जो गिरे और खलास। कुछ भी करने की फुर्सत नहीं मिलती है। हार्ट-फेल होती है तो बैठे2 खत्म हो जाते हैं। मौत ऐसा होने वाला है। बाबा ने विनाश के लिए युक्ति बहुत अच्छी रची है। दिन प्रति दिन तुम जैसे रिफाईन होते जाते हो। वैसे वह भी मौत का सामान भी रिफाईन करते जाते हैं। तुम्हारी बुधि में अभी हमको यह छोड़2 शरीर को छोड़ कर जाने का है। बाबा के पास। शिव बाबा ही याद होगा। औरों को तो कोई न कोई मित्र-सम्बन्धी आद याद आवेंगे। अंत घड़ी कहते हैं राम भगवान को याद करो। तुमको कहने की दरकार नहीं पड़ेगी। तुम जानते हो बाप को याद करते2 यह पुराना शरीर खुशी से छोड़ देंगे। बुधि सब तरफ से हटाने में टाईम लग जाता है। इसमें ही मेहनत है। बाकी 84 के चक्र का ज्ञान तो बहुत सहज है। चक्र पूरा हुआ बाकी हम थोड़े रोज हैं। अभी बाप को ही याद करना है। अपनी नब्ज देखनी है कहां रग तो नहीं जाती है। यह तो हम जो कुछ देखते हैं खलास हो जाने का है। हम प्यार उनको करते हैं जो शिव बाबा की सर्विस में हैं। और कोई से भी प्यार है नहीं। बहुतों का बुधि योग मित्र-सम्बन्धियों आद से है। ज्ञान को जानते ही नहीं। ब्राह्मण ही नहीं। कोई से काम है तो उन से मतलब निकलता है तो युक्ति से रास्ता रखना होता है। मित्र-सम्बन्धियों को भी कुछ न कुछ सुनाते तो है ना? आगे चल कर बहुत आने वाले हैं। बहुत आवेंगे फिर तो उन्हों को भी कशिश होगी। तुम्हारे पास आकर जब सुनते है तो कहते हैं ज्ञान तो बहुत अच्छा है। यह भी ड्रामा में नूंध है। विघ्नपड़ेंगे गाली खावेंगे। जो कुछ होना है नथींग बे न्यु। ड्रामा में नूंध है। हमको ऐसी बाप न करनी चाहिए जिससे उपान्दी हो। बिलकुल मीठा शान्त-चित रहना है। ताली न बजनी चाहिए। कबेदखो इन में क्रोध का भूत है तो भाग जाओ। किनारा कर देना चाहिए। बहुत मीठा बनना है। बाबा पुरुषार्थ करा रहे हैं। शिव बाबा को तो पुरुषार्थी नहीं कहेंगे। यह देहधारी पुरुषार्थी है। उनको तो देह है नहीं। उस ने लोन लिया है तो जरूर किराया तो मिलेगा ना। कितनी गाली खाता हूं। बाबा के कारण गालियां खाई तो इसका हिसाब-किताब तो मिलेगा ना। इसको कहा जाता है "बाट बेन्दे ब्राह्मण फंसे।" यह पता थोड़े ही था बाबा प्रवेश करेंगे। तुम इस मृत्युलोक के निवासी बाकी 8 वर्ष हो। बहुत गई..... याद की यात्रा को बहुत जरूरत है। यही कोई भी चीज में ममत्व नहीं रखना है। क्योंकि यह तो सब कब्रदाखिल होनी है। युक्ति से, प्यार से अपना मतलब भी निकालना चाहिए। कल्याण भी कराना है। पैसा भी अच्छा काम में लगाना है। कुमारी है तो बोलो हम तो अपनी आबादी करने सेन्टर खोलें। बहुतों का कल्याण करें। वह शादी तो बरबादी होती है। औलाद के लिए शादी की जाती है। परन्तु 5 वर्ष तो कोई अभी बनना ही नहीं है तो औलाद क्या करेंगे। बेहद के बाप को तो ब्राह्मण ही जानते हैं। बाप को ब्राह्मण भी बच्चे ही प्यारे लगते हैं। कुछ भी शारीरिक होगा तो कहेंगे अभी तो बच्चों की बहुत सर्विस करनी है। यह शरीर जितना रहे तो सब की सर्विस करता रहूं। सेवा तो बहुत करनी है ना। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को स्नेही बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग।